ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 9 | September 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: 1https:/doi.org/10.61778/ijmrast.v3i9.185

स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल के नवयुवकों की भूमिका: एक अध्ययन

सुधीर सिंह[1], डॉ दिलीप कुमार[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बाराखाल, संतकबीरनगर, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

[2]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, बाराखाल, संतकबीर नगर

[1]Email: Sssudhirbasti16@gmail.com

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल नेताओं और क्रांतिकारियों के बलिदानों से ही नहीं, बल्कि युवाओं की अद्वितीय भूमिका से भी निर्मित हुआ है। पूर्वांचल (उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र—गोरखपुर, बलिया, आज़मगढ़, बनारस, गाजीपुर आदि) इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। यहाँ के नवयुवकों ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर अंग्रेजी शासन को चुनौती दी। बलिया की स्वतंत्र सरकार, BHU के छात्रों का योगदान और गोरखपुर-आजमगढ़ के किसान-युवा आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। प्रस्तुत शोध लेख में पूर्वांचल के नवयुवकों की भूमिका का ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: पूर्वांचल, नवयुवक, स्वतंत्रता आंदोलन, बलिया, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, छात्र आंदोलन।

1. प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को यदि एक महायज्ञ कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि यह ऐसा राष्ट्रीय अभियान था जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई और त्याग, बलिदान एवं संघर्ष के माध्यम से इसे सफल बनाने में योगदान दिया। इस महायज्ञ में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, विद्यार्थियों, व्यापारियों और धार्मिक-सांस्कृतिक संगठनों तक की सहभागिता रही, किंतु इन सबमें सबसे उल्लेखनीय और निर्णायक भूमिका नवयुवकों की थी।

युवा वर्ग में उत्साह, साहस और संगठन क्षमता की जो विशेषता होती है, उसने स्वतंत्रता आंदोलन को ऊर्जा और गति प्रदान की। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने के लिए अपने जीवन का बलिदान किया, जेल की यातनाएँ सही, लाठियाँ खाईं और कभी-कभी फाँसी के फंदे तक को मुस्कुराते हुए स्वीकार किया। उनके इस समर्पण ने जनमानस में आत्मविश्वास जगाया कि अंग्रेजों की सत्ता अजेय नहीं है।

पूर्वांचल, अर्थात् उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग—गोरखपुर, बलिया, बनारस, आज़मगढ़ और गाजीपुर का क्षेत्र—सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक संरचना ने युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। 1857 की प्रथम क्रांति से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक इस क्षेत्र के नवयुवकों ने लगातार सक्रियता दिखाई। असहयोग आंदोलन में छात्रों ने विद्यालय छोड़े, खादी अपनाई और सत्याग्रह में भाग लिया। 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में युवाओं ने भूमिगत गतिविधियों का नेतृत्व किया, तो 1942 में बलिया की "स्वतंत्र सरकार" ने पूरे देश को प्रेरित किया।

इस प्रकार, पूर्वांचल के नवयुवक केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उनकी सक्रियता और बलिदान ने राष्ट्रीय आंदोलन की धाराओं को दिशा दी। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

2. शोध की समस्या

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सामान्यतः राष्ट्रीय स्तर के नेताओं और आंदोलनों को अधिक महत्व दिया गया है, जबकि क्षेत्रीय स्तर पर युवाओं की भूमिका अपेक्षाकृत उपेक्षित रह जाती है। शोध की समस्या यह है कि स्वतंत्रता संग्राम की वास्तविक शक्ति केवल शीर्ष नेतृत्व में नहीं, बल्कि स्थानीय नवयुवकों की सक्रियता और संघर्ष में निहित थी। विशेषकर पूर्वांचल जैसे क्षेत्रीय केंद्रों ने अपने छात्र, किसान और युवा संगठनों के माध्यम से आंदोलन को गतिशीलता और जनाधार प्रदान किया। अतः यह अध्ययन आवश्यक है कि पूर्वांचल के युवाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को किस प्रकार गति और दिशा दी।

3. शोध के उद्देश्य

1. स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल के युवाओं की सक्रिय भूमिका का विश्लेषण करना।
2. स्थानीय स्तर पर हुए छात्र व किसान आंदोलनों को चिन्हित करना।
3. प्रमुख युवा नेताओं और उनके योगदान का अध्ययन करना।
4. राष्ट्रीय आंदोलन पर पूर्वांचल के युवाओं के प्रभाव को रेखांकित करना।

4. शोध पद्धति (विस्तृत रूप में)

इस शोध कार्य में *ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति* का प्रयोग किया गया है। इस पद्धति के अंतर्गत तथ्यों का संग्रह, उनका परीक्षण, विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा, जिससे पूर्वांचल के युवाओं की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका को प्रमाणिक रूप से स्थापित किया जा सके।

- **प्राथमिक स्रोत**

  - उस समय प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ जैसे *प्रताप*, *भारत मित्र*, *आज* इत्यादि, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित समाचार, विचार और युवाओं की सक्रियता का प्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है।
  - सरकारी रिपोर्टें एवं आधिकारिक अभिलेख, जिनसे औपनिवेशिक सत्ता की दृष्टि और क्षेत्रीय गतिविधियों पर उसके प्रभाव का पता चलता है।
  - स्वतंत्रता सेनानियों के भाषण, आत्मकथाएँ, संस्मरण और पत्राचार, जिनसे युवाओं की मानसिकता, प्रेरणा और वास्तविक योगदान का प्रत्यक्ष चित्र उभरता है।

- **द्वितीयक स्रोत**

  - प्रख्यात इतिहासकारों की पुस्तकें, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम की व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है और क्षेत्रीय स्तर की गतिविधियों पर विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण मिलता है।
  - स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी, जिनसे उनकी व्यक्तिगत यात्रा, संघर्ष और विचारधारा की झलक मिलती है।
  - शोध आलेख, शोध प्रबंध और समकालीन अध्ययन, जिनमें पूर्वांचल जैसे विशेष क्षेत्रों में युवाओं की भूमिका पर केंद्रित विवेचना की गई है।

इस शोध में इन स्रोतों के तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाएंगे, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और गति को क्षेत्रीय स्तर के युवाओं ने किस प्रकार सशक्त किया।

5. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पूर्वांचल का सामाजिक-राजनीतिक इतिहास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं की सक्रिय भागीदारी की पृष्ठभूमि तैयार करता है। यह क्षेत्र सदियों से सांस्कृतिक जागरण, धार्मिक आंदोलन और राजनीतिक संघर्ष का केंद्र रहा है। यहाँ की जनता विशेषकर युवा वर्ग ने न केवल ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न धाराओं को दिशा देने का कार्य भी किया। पूर्वांचल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को तीन प्रमुख आयामों में देखा जा सकता है – 1857 की क्रांति, राष्ट्रीय चेतना का उदय, और सांस्कृतिक विरासत।

1. 1857 की क्रांति और पूर्वांचल

1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली बड़ी लहर थी, जिसने अंग्रेजी सत्ता की जड़ों को हिलाकर रख दिया। इस क्रांति का प्रभाव पूर्वांचल क्षेत्र पर गहराई से पड़ा।

- **गाजीपुर**

  गाजीपुर जिले के नवयुवक सिपाहियों और किसानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूंका। यहाँ की जनता ने संगठित होकर सैनिकों का साथ दिया और अंग्रेजी सत्ता की चूलें हिला दीं। गाजीपुर के कई गांवों में विद्रोहियों ने अंग्रेज अधिकारियों को खदेड़ दिया और प्रशासनिक ढाँचे को क्षतिग्रस्त किया।

- **आजमगढ़**

  आजमगढ़ विद्रोह का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना। यहाँ के युवाओं और किसानों ने स्वतंत्र शासन की स्थापना का सपना देखा। आजमगढ़ में 1857 के दौरान एक समानांतर प्रशासनिक व्यवस्था कायम की गई, जिसमें स्थानीय नेतृत्व को प्रमुखता दी गई। यह अंग्रेजों के लिए एक सीधी चुनौती थी।

- **बलिया**

  बलिया जिले के युवाओं और किसानों ने क्रांति में अभूतपूर्व योगदान दिया। बलिया में अंग्रेजों को अस्थायी रूप से खदेड़कर "जनता राज" की स्थापना की गई थी। बाद में भले ही अंग्रेजों ने पुनः नियंत्रण स्थापित कर लिया, परंतु इस विद्रोह ने साबित कर दिया कि पूर्वांचल का युवा वर्ग किसी भी स्तर पर बलिदान देने को तत्पर है।

इस प्रकार 1857 की क्रांति ने युवाओं में स्वतंत्रता की लौ प्रज्वलित की। यह विद्रोह भले ही असफल रहा, किंतु इसने आने वाले दशकों में राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की और युवाओं को संघर्ष तथा संगठन की महत्ता का अनुभव कराया।

2. राष्ट्रीय चेतना का उदय

1857 के बाद अंग्रेजी शासन ने दमन चक्र चलाकर आंदोलन को दबाने का प्रयास किया, किंतु धीरे-धीरे पूर्वांचल में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार होने लगा। इसमें कई सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक कारकों की भूमिका रही।

- **हिंदी पत्रकारिता का योगदान**

  पूर्वांचल हिंदी पत्रकारिता का गढ़ रहा है। *प्रताप*, *भारत मित्र* और बाद में *आज* जैसी पत्रिकाओं ने युवाओं को राजनीतिक दृष्टि से जागरूक किया। गणेश शंकर विद्यार्थी और बाबूराव विष्णु पराड़कर जैसे पत्रकारों ने अपने लेखन से युवाओं के भीतर राष्ट्रीय चेतना जगाई। इनके लेखों ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद की पोल खोली, बल्कि युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय होने के लिए प्रेरित भी किया।

- **शिक्षा संस्थानों की भूमिका**

  बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना (1916) और बनारस, गाजीपुर, आज़मगढ़ के अन्य विद्यालय- महाविद्यालय युवाओं में नई चेतना के केंद्र बने। इन संस्थानों ने आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रभक्ति और संगठन की भावना विकसित की। छात्रों के बीच वाद-विवाद, साहित्यिक आयोजन और राजनीतिक चर्चाएँ स्वतंत्रता की चेतना को गहराई देती थीं।

- **लोकगीत और जनसंस्कृति**

  पूर्वांचल की लोकसंस्कृति ने भी युवाओं के भीतर स्वतंत्रता की ज्वाला जगाई। इस क्षेत्र के लोकगीत, आल्हा-उदल की वीरगाथाएँ और बिरहा के स्वर युवाओं को शौर्य, बलिदान और संघर्ष की प्रेरणा देते थे। ग्रामीण अंचलों में गाए जाने वाले इन गीतों ने अंग्रेजी सत्ता के प्रति असंतोष को आमजन तक पहुँचाया और क्रांतिकारी विचारों को पंख दिए।

इस प्रकार पत्रकारिता, शिक्षा और लोकसंस्कृति ने मिलकर पूर्वांचल में राष्ट्रीय चेतना का वातावरण तैयार किया।

3. सांस्कृतिक विरासत और स्वतंत्रता की भावना

पूर्वांचल सदियों से सांस्कृतिक और धार्मिक आंदोलनों का केंद्र रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया।

- **बनारस का योगदान**

  काशी (वाराणसी) भारत का सांस्कृतिक और शैक्षणिक केंद्र रहा है। यहाँ के घाट, मंदिर और आश्रम केवल धार्मिक महत्व के ही नहीं थे, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक चेतना के भी केंद्र बने। बनारस में स्थापित *काशी विद्यापीठ* ने युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रशिक्षण और वैचारिक दिशा प्रदान की। यह संस्थान छात्रों में राष्ट्रभक्ति और आत्मनिर्भरता का संस्कार बोता था।

- **संतों और सुधारकों का प्रभाव**

  पूर्वांचल की सांस्कृतिक विरासत में संत परंपरा का गहरा प्रभाव रहा। कबीर, रविदास और अन्य संतों की विचारधारा ने सामाजिक समानता और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। यही विचार आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन में सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता की नींव बने।

- **संगठन और जागरण**

पूर्वांचल में मेलों, अखाड़ों और जातीय-धार्मिक आयोजनों ने युवाओं के बीच संगठन की परंपरा को मजबूत किया। इन आयोजनों में राजनीतिक संदेश भी निहित होते थे, जिससे युवाओं को स्वतंत्रता संघर्ष में सामूहिक रूप से भाग लेने की प्रेरणा मिलती थी।

पूर्वांचल का सामाजिक-राजनीतिक इतिहास स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और गति को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 1857 की क्रांति ने जहाँ युवाओं के भीतर विद्रोह की चिंगारी जलाई, वहीं पत्रकारिता, शिक्षा और लोकसंस्कृति ने उस चिंगारी को राष्ट्रीय चेतना की प्रज्वलित ज्योति में बदल दिया। साथ ही, बनारस और क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासत ने इस चेतना को स्थायित्व और संगठनात्मक स्वरूप दिया।

युवाओं की सक्रियता केवल क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को गति और नई ऊर्जा प्रदान की। इस प्रकार पूर्वांचल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं की निर्णायक भूमिका की पुष्टि करती है।

6. स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल के नवयुवकों की भूमिका

(क) असहयोग आंदोलन (1920–22)

- छात्रों का स्कूल-कॉलेज बहिष्कार, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना।
- BHU, गोरखपुर और आज़मगढ़ के छात्रों का सत्याग्रह में भाग लेना।
- युवाओं द्वारा ब्रिटिश वस्त्र बहिष्कार और खादी को अपनाना।

(ख) किसान-युवा आंदोलन

- गोरखपुर के बाबा राघवदास और नवयुवक कार्यकर्ताओं ने किसानों को संगठित किया।
- बलिया और आज़मगढ़ में युवाओं ने ग्रामीण समाज में राष्ट्रीय चेतना जगाई।
- किसान सभाओं और आंदोलनों में छात्र व ग्रामीण युवा दोनों की सहभागिता।

(ग) सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34)

- नमक सत्याग्रह से प्रेरणा लेकर युवाओं ने भूमिगत क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाईं।
- गोरखपुर-आजमगढ़ के युवाओं ने सरकारी भवनों पर कब्ज़ा करने और अंग्रेजी कानूनों का विरोध करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

(घ) भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

- बलिया की "स्वतंत्र सरकार" (चित्तू पांडेय के नेतृत्व में)।
- रेलवे ट्रैक उखाड़ना, डाक-तार विभाग पर कब्ज़ा करना।
- गोरखपुर और गाजीपुर के युवाओं का भूमिगत आंदोलन और अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिरोध।

7. प्रमुख नवयुवक नेता

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह था कि इसमें युवाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई। पूर्वांचल क्षेत्र इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहाँ नवयुवक नेताओं ने न केवल स्थानीय स्तर पर संगठनात्मक कार्य किए, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन की धारा को भी दिशा प्रदान की। बलिया, गोरखपुर, बनारस और आज़मगढ़ जैसे जिलों के युवाओं ने क्रांतिकारी कार्य, समाजसेवा, पत्रकारिता और नेतृत्व के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को गति दी। इनमें चित्तू पांडेय, बाबा राघवदास, महंथ दिग्विजयनाथ और राजकुमार शुक्ल प्रमुख नाम हैं। इसके अतिरिक्त छात्र संगठनों की सक्रियता ने पूर्वांचल को स्वतंत्रता संघर्ष का जीवंत केंद्र बना दिया।

1. चित्तू पांडेय (बलिया) – बलिया की स्वतंत्र सरकार

चित्तू पांडेय को प्रायः *'बलिया का नेपोलियन'* कहा जाता है। वे 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में बलिया जिले में हुए विद्रोह के शीर्ष नेता थे।

- अगस्त 1942 में जब महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' का नारा दिया, तब बलिया के नवयुवकों ने चित्तू पांडेय के नेतृत्व में अंग्रेजी प्रशासन को चुनौती दी।
- 19 अगस्त 1942 को बलिया में अंग्रेज अधिकारियों को खदेड़कर 'स्वतंत्र सरकार' की स्थापना की गई। यह सरकार लगभग एक सप्ताह तक चली और इसमें स्थानीय युवाओं ने प्रशासनिक जिम्मेदारी संभाली।
- इस दौरान टैक्स वसूली रोक दी गई, जेलों के कैदी मुक्त कर दिए गए और जनसाधारण को स्वशासन का अनुभव कराया गया।

- यद्यपि कुछ दिनों बाद अंग्रेजी सेना ने कठोर दमन चक्र चलाकर बलिया पर पुनः अधिकार कर लिया, लेकिन इस घटना ने राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा दी और युवाओं में यह विश्वास जगाया कि अंग्रेजों को परास्त करना संभव है।

चित्तू पांडेय का यह साहसिक प्रयास पूर्वांचल के युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बना और यह सिद्ध कर दिया कि स्थानीय नेतृत्व भी स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

2. बाबा राघवदास (गोरखपुर) – समाजसेवा और राष्ट्रीय आंदोलन

गोरखपुर के बाबा राघवदास पूर्वांचल के उन नवयुवक नेताओं में से थे जिन्होंने समाजसेवा और राजनीति दोनों क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दिया।

- वे मूलतः एक समाजसेवी और शिक्षक थे, जिन्होंने गरीबों, दलितों और शोषित वर्गों के लिए जीवन समर्पित किया।
- उन्होंने *कस्तूरबा गांधी आश्रम* की स्थापना की, जहाँ शिक्षा और स्वावलंबन के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को जागरूक किया जाता था।
- वे गोरखपुर और आसपास के क्षेत्रों में *चरखा आंदोलन* और *स्वदेशी वस्तुओं* के प्रचार-प्रसार में अग्रणी रहे।
- राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्होंने युवाओं को संगठित कर सत्याग्रह और आंदोलनों में भागीदारी कराई।
- समाजवाद और गांधीवादी मूल्यों से प्रभावित बाबा राघवदास ने स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक न्याय को भी अपना ध्येय बनाया।

उनके नेतृत्व में पूर्वांचल के हजारों युवाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक पुनर्निर्माण दोनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

3. महंथ दिग्विजयनाथ (गोरखपुर) – धार्मिक नेतृत्व और राजनीतिक सक्रियता

महंथ दिग्विजयनाथ गोरखनाथ मंदिर के महंथ थे और युवावस्था में ही राजनीति से जुड़ गए थे।

- वे प्रारंभिक समय में हिंदू महासभा से जुड़े और उसी विचारधारा के अंतर्गत युवाओं को संगठित किया।
- यद्यपि उनका राजनीतिक दृष्टिकोण गांधीवादी धारा से भिन्न था, फिर भी उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई।
- 1922 में *चौरी-चौरा कांड* के बाद गोरखपुर क्षेत्र में युवाओं में जोश और असंतोष फैला, उसमें दिग्विजयनाथ की सक्रियता उल्लेखनीय रही।
- बाद के समय में उन्होंने धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को राजनीति से जोड़कर युवाओं को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया।

उनकी राजनीतिक यात्रा भले ही विवादास्पद रही हो, किंतु यह निर्विवाद है कि गोरखपुर के युवाओं को संगठित करने में उनका प्रभाव गहरा था।

4. राजकुमार शुक्ल – गांधी को चंपारण तक लाने वाले

राजकुमार शुक्ल भले ही राष्ट्रीय स्तर पर अपेक्षाकृत कम चर्चित रहे, किंतु उनकी भूमिका ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

- वे मूलतः पूर्वांचल (गोरखपुर-आजमगढ़ क्षेत्र) से जुड़े किसान नेता थे, जिन्हें किसानों की पीड़ा और शोषण की गहरी चिंता थी।
- वे लगातार महात्मा गांधी से संपर्क साधते रहे और उन्हें बिहार के चंपारण जिले में नीलहों द्वारा किसानों के शोषण की स्थिति दिखाने के लिए आग्रह करते रहे।
- अंततः उनके सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप गांधीजी चंपारण गए और वहीं से *चंपारण सत्याग्रह (1917)* का शुभारंभ हुआ।
- यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ, क्योंकि इसके माध्यम से गांधी का नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हुआ।

इस प्रकार राजकुमार शुक्ल ने परोक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। यह उदाहरण बताता है कि पूर्वांचल के नवयुवक केवल क्षेत्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी निर्णायक भूमिका निभाते रहे।

5. छात्र संगठन – BHU और गोरखपुर के छात्र

पूर्वांचल के छात्रों ने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई।

- **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)**
- 1916 में स्थापित BHU केवल शिक्षा का केंद्र नहीं रहा, बल्कि यह राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का गढ़ बना। यहाँ के छात्र विभिन्न आंदोलनों – असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन – में सक्रिय रहे। कई बार BHU छात्र ब्रिटिश पुलिस की लाठियों का सामना करते हुए गिरफ्तार हुए।

- **गोरखपुर और आजमगढ़ के कॉलेज**

  यहाँ के छात्रों ने कांग्रेस और समाजवादी धारा दोनों में सक्रिय योगदान दिया। गोरखपुर के छात्रों ने 1930 के दशक में नमक सत्याग्रह और विदेशी वस्त्र बहिष्कार जैसे अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **छात्र संगठनों की भूमिका**

  छात्रों ने स्वयंसेवी संगठन और क्रांतिकारी दल बनाए। इन संगठनों ने भूमिगत गतिविधियों, पर्चे बाँटने, आंदोलन की रणनीति बनाने और ग्रामीण युवाओं को जोड़ने का कार्य किया।

छात्रों की यह सक्रियता इस बात का प्रमाण है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल नेताओं का आंदोलन नहीं था, बल्कि युवा वर्ग की ऊर्जा से ही वह जनांदोलन का स्वरूप ग्रहण कर पाया।

8. पूर्वांचल के नवयुवकों की चुनौतियाँ

पूर्वांचल के नवयुवकों ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, किंतु उनके सामने अनेक चुनौतियाँ भी थीं। सबसे बड़ी चुनौती थी औपनिवेशिक दमन। अंग्रेजी शासन ने युवाओं को आंदोलन से रोकने के लिए कठोर कदम उठाए। हजारों युवाओं को गिरफ्तार कर जेलों में डाला गया, यातनाएँ दी गईं और कई को फाँसी या गोलीकांड का सामना करना पड़ा। बलिया और गोरखपुर जैसे क्षेत्रों में दमनचक्र विशेष रूप से तीव्र था।

दूसरी चुनौती थी संसाधनों की कमी। अधिकांश युवा ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते थे। संगठन और आंदोलन के लिए आर्थिक सहयोग जुटाना कठिन था। साधनों की कमी के बावजूद युवाओं ने स्वदेशी वस्त्र, चंदा और श्रमदान के माध्यम से संघर्ष जारी रखा।

तीसरी चुनौती थी शैक्षिक सीमाएँ। क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों का अभाव था और युवाओं को ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली पर निर्भर रहना पड़ता था, जिससे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण विकसित करने में कठिनाई आती थी। इसके बावजूद काशी विद्यापीठ और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसे संस्थान युवाओं के लिए वैचारिक और संगठनात्मक केंद्र बने।

इन कठिनाइयों के बावजूद पूर्वांचल के युवाओं ने अपने साहस और संकल्प से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी।

9. राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव

पूर्वांचल के नवयुवकों के योगदान ने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा और गति दोनों को गहराई से प्रभावित किया। बलिया की स्वतंत्र सरकार (1942) ने यह सिद्ध कर दिया कि स्थानीय नेतृत्व और युवाओं की एकजुटता से अंग्रेजी शासन को चुनौती दी जा सकती है। इस घटना ने पूरे देश को प्रेरित किया और युवाओं में यह विश्वास जगाया कि स्वतंत्रता केवल स्वप्न नहीं, बल्कि साकार संभावना है। इसके साथ ही, छात्र आंदोलनों की परंपरा ने स्वतंत्रता संग्राम में नई ऊर्जा भरी। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और गोरखपुर जैसे शैक्षणिक केंद्रों से निकले छात्रों ने न केवल सत्याग्रह और बहिष्कार आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया, बल्कि बाद के दशकों में भारतीय राजनीति और समाज सुधार आंदोलनों को भी दिशा दी।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव था कि ग्रामीण समाज और किसान आंदोलनों में युवाओं की भागीदारी ने स्वतंत्रता संग्राम को सर्वव्यापी जन-आंदोलन का स्वरूप दिया। पूर्वांचल के नवयुवकों ने किसान और मजदूर वर्ग को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा, जिससे स्वतंत्रता संघर्ष केवल शहरी मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर व्यापक ग्रामीण चेतना का हिस्सा बन गया। इस प्रकार पूर्वांचल के युवाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को जनाधारित, सर्वसमावेशी और गतिशील बनाया।

10. चर्चा और विश्लेषण

पूर्वांचल के नवयुवकों की भूमिका केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति को भी प्रभावित किया।

- ग्रामीण समाज और किसान आंदोलनों में युवाओं की भागीदारी से स्वतंत्रता आंदोलन को जमीनी आधार मिला।
- छात्र आंदोलनों ने राष्ट्रीय शिक्षा की धारा को मजबूत किया।
- युवाओं की शहादत और बलिदान ने भारतीय जनता में आत्मविश्वास जगाया कि अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी जा सकती है।

11. निष्कर्ष

पूर्वांचल के नवयुवकों ने स्वतंत्रता आंदोलन में केवल सहभागी के रूप में नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में भी योगदान दिया। असहयोग से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक उनकी सक्रियता ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति और शक्ति दी। बलिया की स्वतंत्र सरकार इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस प्रकार, पूर्वांचल के नवयुवकों का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का गौरवशाली अध्याय है, जिसे इतिहास लेखन में उचित स्थान मिलना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

[1]. बिपिन चंद्र. *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

[2]. मिश्रा, शिवशंकर. *बलिया की स्वतंत्र सरकार*. वाराणसी: गंगा पुस्तक भंडार।

[3]. श्रीवास्तव, रमेशचंद्र. *उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम*. इलाहाबाद: इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[4]. नेहरू, जवाहरलाल. *भारत की खोज*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।

[5]. समकालीन पत्र-पत्रिकाएँ – *प्रताप*, *भारत मित्र*, *आज़ाद*, *हिंदुस्तान टाइम्स*।

Cite this Article

सुधीर सिंह, डॉ दिलीप कुमार, "स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल के नवयुवकों की भूमिका: एक अध्ययन"*International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 9, pp. 31-37, September 2025.*
Journal URL: *https://ijmrast.com/*
DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i9.185*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.